'शैक्षिक रुचियों का मनौवैज्ञानिक विश्लेषण'

(किशोरावस्था के विशेष सन्दर्भ में)

Psychological analysis of educational interests with special reference to adolescence

ड़ा पूनम गुप्ता
(लेक्चरर बी0एड़ विभाग)
संत हरिदास कालेज ऑफ
हायर एजूकेशन,दिल्ली
मोबाः 09310902913
ई– मेल s.poonam1978@gmail.com

शोध सारांश

रुचि मनुष्य की उपहार स्वरुप भेट है जो समय समय पर वातावरण के अनुरूप पोषित होती है रुचियों के उत्थान में शिक्षा का अहम स्थान है, सामाजिक आर्थिक मनोरंजनात्मक तथा संवेगात्मक और शैक्षिक रुचियों का विकास शिक्षा के बिना सम्भव नहीं है। इसलिये शिक्षा रुचियों के पोषण में अहम हो जाती हैं। औपचारिक शिक्षा में शैक्षिक रुचियों का होना शिक्षा के सम्पूर्ण विकास तथा लक्ष्यों का पूरा करना होता है। शैक्षिक रुचियों में वृद्धि कैसे हो तथा किशोरों का रुझान शिक्षा की ओर हो शिक्षा के प्रति उनकी आकृष्टता कैसी हो इन बिन्दुओं को बेहतर बनाने के लिये शैक्षिक रुचियों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अति आवश्यक है। निष्कर्षों के आधार पर इनकी समीक्षा करके सुझावों पर ध्यान आकृष्ट करना ही शोध का विषय है।

शब्द कुंजी– रुचि मनोवैज्ञानिक किशोर

प्रस्तावना

रुचि मानव को प्रकृति द्वारा दिया गया सर्वोत्तम उपहार है। यह सार्वभौमिक सत्य है कि मनुष्य की जिस क्षेत्र में सर्वोत्तम रुचि होती है वह उस क्षेत्र में न सिर्फ मन लगाकर कार्य करता है बल्कि वह उस क्षेत्र में निरन्तर वृद्धि और विकास के नये आयाम प्रस्तुत करता है। मानव अर्थात बालक का विकास स्वयं न होकर एक चरणबद्ध प्रक्रिया के द्वारा होता है जिसमें उसका शारीरिक मानसिक सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास होता है। बालक के विकास की प्रारम्भिक अवस्था शैशवावस्था होती है। जिसमें शिशु का शारीरिक विकास तो तीव्र गति से होता है परन्तु वह वौद्धिक विकास से अपरिपक्व रहता है तदुपरान्त वाल्यावस्था में परिवार के वातावरण के अनुरुप चित परिचित होकर स्वयं का विकास करने लगता है। इसके उपरान्त बालक तीसरी अवस्था किशोरावस्था में प्रवेश करता है जो वाल्यावस्था और प्रौढावस्था का संधि काल है जिसमें रुचियों का सक्रिय और निष्क्रिय होना आरम्भ हो जाता है। यह रुचियां चिर स्थायी होकर उसके जीवन का आधार बन जाती है ये रुचियां किसी भी क्षेत्र में वलवती हो सकती है जिस क्षेत्र में यह रुचियां वलवती होती है बालक उस क्षेत्र में अधिकाधिक ज्ञान अर्जित करता है रुचियां परिवार समाज और वातावरण के

अनुरुप बालक को प्रभावित करती हैं। ये रुचियां मनोरंजनात्मक व्यावसायिक सामाजिक शैक्षिक रूप से मानव मस्तिष्क पर वलवती होती है।

व्यक्ति के पोषण और विकास के लिये ये सभी प्रकार की रुचियां अति आवश्यक है पोषण और विकास के लिये शिक्षा मानव जीवन का महत्वपूर्ण आधार है जो प्रत्येक प्रकार की रुचियों को अनुपालित करने में महत्वपूर्ण स्थान रखती है, इसलिये बालक के विकास में शैक्षिक रुचियों का स्थान अति महत्वपूर्ण हो जाता है।

शिक्षा मानव विकास में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से कार्य करती है दूसरे शब्दों में कहें तो यह स्पष्ट होगा कि शिक्षा का अर्थ है सीखना अर्थात किसी भी विषय वस्तु को सीखकर या उस विषय वस्तु से प्रभावित होकर या आकृष्ट होकर रुचि स्वरुप अंगीकार करता है और स्वयं का विकास करता है, तब भी वह शिक्षा को ही व्यक्त करता है। किशोरावस्था अति संवेदनशील अवस्था है जहां बालक के जीवन में कई उतार चढाव आते है इसलिये किशोरावस्था क्या है? और इस अवस्था में रुचियां किस प्रकार वलवती होती है? और बालक के विकास में शैक्षिक रुचियों का क्या महत्व है? इसके साथ ही शैक्षिक रुचियों का मानव जीवन में क्या योगदान है? इन पर शोध अघ्घयन की आवश्यकता है।

किशोरावस्था और रुचियां

व्यक्ति के जीवन में रुचियों का अहम स्थान है क्योंकि मानव की दिषा और दशा में अहम स्थान रखती है। वैसे तो रुचियां किसी भी अवस्था में उत्पन्न हो सकती है, लेकिन किशोरावस्था में मानसिक सामाजिक परिवर्तनों के फलस्वरुप रुचियों के दृष्टिगत किशोरावस्था अति महत्वपूर्ण हो जाती है क्यों कि किशोरावस्था जीवन की वह अवस्था है जब बालक न तो बच्चा होता और न ही प्रौढ़।

किशोरावस्था के शाब्दिक अर्थ की चर्चा करने पर किशोरावस्था की महत्ता अधिक हो जाती है किशोरावस्था अंग्रेजी शब्द ऐडोलसेन्स का हिन्दी रुपान्तर है जिसका अर्थ परिपक्वता की ओर बढना किशोरावस्था में शारीरिक और संवेगात्मक परिवर्तन के साथ मानसिक विकास भी होता है जिससे उसमें आत्मसम्मान और आत्मसजगता की होने की भावना विकसित होती है बालक अपने व्यक्तित्व के बारे में सजग रहने लगता है और उसमें यह उत्सुकता उत्पन्न हो जाती कि दूसरे उसके बारे में क्या सोचते है वह किसी भी व्यक्तित्व का अनुपालन करके स्वयं में उस व्यक्तित्व को प्रभावी रुप धारण करने लगता है इस अवस्था में परिवर्तनों के दृष्टिगत और लक्ष्यों का निर्धारण में शिक्षा अहम भूमिका का निर्वाहन करती है इसके साथ ही किशोरावस्था में बालक अपने भविष्य के बारे में भी अपना निर्णय लेते हैं शिक्षा के लिये स्कूल कालेज संकाय पाठयक्रम का चुनाव करना भी इस अवस्था में महत्वपूर्ण विषय हो जाता है।

किशोरावस्था में सोचने की तर्क जिसमें करने तथा निर्णय लेने की क्षमता का विकास हो जाता है जिससे वह अध्यापक की शिक्षाओं को यथास्थिति को स्वीकार न करके सोच समझकर ही स्वीकार करते है, इसलिये विद्वानों ने किशोरावस्था को बडे बल और तनाव और विरोध की अवस्था से सम्बोधित किया है।[1] सार्वभौमिक सत्य है कि किशोरावस्था वाल्यावस्था और प्रौढावस्था का सेतु है इस अवस्था में अनेकानेक परिवर्तनों के साथ रुचियों का सृजनात्मक विकास भी होता है रुचियों का उत्पन्न होना एवं उनका विकास होना वातावरण पर निर्भर करता है बालक बालिकाओं की रुचियां वातावरण के अनुसार उत्सर्जित और परिवर्तित होती रहती है यही रुचियॉ स्थायी होकर भविष्योन्मुखी लक्ष्यों के रुप में चिरस्थायी भी हो जाती

हैं। रुचियों के पोषण में तथा भविष्योन्मुखी लक्ष्यों में शिक्षा अति आवश्यक है। इसलिये किशोरावस्था में शैक्षिक रुचियों महत्वपूर्ण हो जाती हैं और उन पर विश्लेशण करना भी समाचीन हो जाता है।

रुचियों के दृष्टिगत शैक्षिक रुचियों को मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

रुचि क्या है और इसके कितने प्रकार हैं और किन प्रकारों से किशोरावस्था में रुचियॉ पोषित होतीं हैं? इनका विश्लेषण आवश्यक है। सामान्यतः रुचि शब्द वैसे तो बहुत ही छोटा है लेकिन यह किशोरावस्था के दृष्टिगत यह शब्द बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है। रुचि एक स्वाभाविक प्रकृति है जो सामान्यतः संसार के सभी मानव प्रजाति में पाई जाती है। साधारण शब्दों में रुचि से तात्पर्य किसी तथ्य वस्तु या प्रतिक्रिया के प्रति ध्यान क्रेंदित करना है जब हमे कोई वस्तु अच्छी लगती है या पसन्द आती है तो स्वाभाविक रुप से हमारी रुचि उसके प्रति हो जाती है जिसके फलस्वरुप हम उसकी ओर ध्यान क्रेदित कर लेते है। रुचि के दृष्टिगत स्ट्रांग महोदय[2] स्पष्ट करते है कि रुचि में हम किसी वस्तु के प्रति जागृत होते है उसके प्रति प्रतिक्रिया करने को तैयार रहते है और उसकी पसन्द करते है किन्तु जब हमारी उस वस्तु के प्रति रुचि नही होती है तो हम इस भागते है। एक अन्य विद्वान सुपर महोदय[3] कहते हैं कि रुचि कोई पृथक मनोवैज्ञानिक इकाई न होकर बल्कि समस्त मानव व्यवहार का पहलू है।

सर्वमान्य मत के अनुसार रुचि एक वेदनात्मक पसंदगी या नपसंदगी विन्यास है इसका व्यक्ति की योग्यताओं एवं अभिक्षमताओं से कोई समबंध नहीं होता है यह जन्मजात एंव अर्जित दोनों प्रकार की हो सकती है ये रुचियां कई प्रकार की होती है जैसे– मनोरंजनात्मक, सामाजिक, आर्थिक और संवेगात्मक ,भावात्मक एवं शैक्षिक रुचियॉ आदि। बालक के विकास में रुचियॉ के साथ शिक्षा एक बहूमूल्य धटक है ,समाज में जन्में किसी भी बालक के मस्तिष्क में अपनी प्रत्येक रुचि का समाधान तथा समस्त भविष्योन्मुखी लक्ष्यों का निर्धारण शिक्षा के द्वारा ही सम्भव है इसलिये रुचियों के दृष्टिगत शैक्षिक रुचियों का विश्लेषण करना समाचीन हो जाता है।

बालक की प्रथम पाठशाला परिवार होती है जहां बालक विभिन्न प्रकार के माध्यम से शिक्षित होता है। तत्पश्चात औपचारिक शिक्षा हेतु विधालय के वातावरण से सम्पर्कित होता है बालक प्राइमरी स्कूल से जूनियर हाईस्कूल तक नई विचार और नयी धारणाओं का अनुसरण करते हैं इन बालकों के पाठयक्रम का निर्माण सरल एवं सुबोध भाषा में कहानी कविताओं के माध्यम से ज्ञान अर्जित कराया जाता है जिससे वह उसका अनुकरण करके उनके प्रति आकृष्ट हो जाता है जो शैक्षिक रुचि में कहानी कविताओं नाटक उपन्यास आधारित पात्रों एवं नायकों की जीवन शैली से आकृष्ट होकर वह स्वयं ही तार्किकता के आधार पर और भविष्योन्मुखी लक्ष्यों को निर्धारित करने लगते हैं हाई स्कूल में प्रवेश लेने के बाद वह विषयों के चुनाव से लेकर पुस्तकों के चयनीकरण में परिपक्व हो जाते हैं कुछ विषय उन्ही पसंदगी के रुप में स्थित होकर अपने रुचि के रुप में स्थायी हो जाते हैं इन रुचियों में संलिप्तता के साथ ही तार्किक विश्लेषणों के द्वारा उनमें निरंतर महारथ हासिल करते रहते हैं।

बालक के इण्टरमीडियट में प्रवेश लेते ही उन बालकों में एक नयापन दिखाई देता है कुछ बालकों को रुचि के आधार शिक्षण पद्वति न मिलने के कारण उन्हें स्कूल से अनिच्छा होने लगती है साथ ही शिक्षक द्वारा प्राप्त शिक्षा से सन्तुष्टि नही मिलती है ये कही न कही शारीरिक परिवर्तन के कारणों के

अर्न्तगत भी होता है वही कुछ विशेष बालक कुशाग्र बृद्धि के होते है जो अपनी शैक्षिक रुचियों को शिक्षा की ज्ञान पिपासा से शान्त करने में अग्रणी रहते है।

किशोरों की क्षमताओं और योग्यताओ को बाहर लाने के लिये तथा शैक्षिक रुचियों को उत्कृष्ट करने के लिये स्कूलों के विभिन्न सुझााव प्रदान किये जाते है। स्कूलो में बालक अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये तथा स्वयं की रुचियों को धरातल में लाने के लिये अनुशासन सहयोग प्रतिस्पर्धा तथा समाज के अनुसार स्वयं को समायोजित करना सीखते है।

प्रत्येक बालक की कार्य क्षमता योग्यता तथा शैक्षिक रुचियॉ समान नही होती है लेकिन इन शैक्षिक रुचियों के माध्यम से ही बालक स्वयं का विकास करते है इसलिये इनकी रुचियों के अनुरुप ही शिक्षण कार्य करके ही सफल शिक्षण कार्य को पूर्ण किया जा सकता है। शोधकर्ता द्वारा किशोरों की रुचियों का प्रश्नावली माध्यम से प्राप्त कर एक उत्तम शिक्षण हेतु सुझाव प्रस्तुत किये है।

शोध परिकल्पना

किशोरों के समुचित विकास में रुचियों का महत्वपूर्ण स्थान है और रुचियों के पोषण में शिक्षा का विशेष स्थान है ऐसे में शैक्षिक रुचियों का मनौवैज्ञानिक विश्लेषण अति आवश्यक है।

अनुसंधान प्रस्ताव

शैक्षिक रुचियां किशोरों के कैरियर रोजगार आदि महत्वपूर्ण विषयक है पाठयक्रम का चुनाव, विषय चुनाव, सामाजिकता भावात्मकता रुचियों के दृष्टिगत शैक्षिक रुचियां अति आवश्यक हैं इसलिये शैक्षिक रुचियों के मनौवैज्ञानिक विश्लेषण की आवश्यकता है जिससे शैक्षिक रुचियों को प्रशिक्षित किया जाये।

निष्कर्ष एवं सुझाव

रुचि वह प्रवृत्ति है जो किसी अनुभव में लग जाती है उसमें निरंतर होती रहतीं हैं।[4] रुचियां परिवार और समाज के वातावरण के अनुकूल पल्लिवत होती है जिनका पोषण परिवार समाज तथा विद्यालय में होता है शैक्षिक रुचियां किसी भी बालक के विकास में अहम स्थान रखती है। किशोरोंवस्था में बालक अति संवेदनशील होता है जो प्रत्येक रुचि के प्रति आकृष्ट होता है लेकिन समुचित ज्ञान न मिलने के कारण वह स्वयं का विकास नही कर पाता है किशोर अपनी ज्ञान पिपासा शान्त करने के लिये अधिकाधिक स्नातक से अधिक शिक्षा प्राप्त करना चाहते है। शैक्षिक रुचियों के अर्न्तगत वह प्रसार तथा इण्टरनेट की अपेक्षा में शिक्षक से शिक्षा गृहण करना चाहते है अधिकांशतः किशोर शिक्षा के प्रति रुचि होने के कारण वह विधालय में नियमित उपस्थित रहना चाहते है। अधिकांषत किशोर शिक्षा के प्रति आलस्य के कारण विधालय में नियमित नही रहते है। इन शैक्षिक रूचियों की विसंगतियों को दूर करने हेतु सुझाव प्रस्तुत करना भी शोधकत्री का नैतिक दायित्व है।

शोध आकडों के निष्कर्षवत किशोरों की रुचियों के आधार पर निम्न सुझाव प्रस्तुत हैं–

शिक्षण पद्धति किशोरों की रुचियों के आधार पर विकसित करनी चाहिये जिससे उनमें शिक्षा के प्रति लगाव उत्पन्न हो और वह विषय और पाठयक्रम में रुचि ले। इसके साथ ही स्काउटिंग वाद–विवाद प्रतियोगिता तथा अन्य रचनात्मक कार्यो को कराकर किशोरों को शिक्षाके प्रति आकृष्ट किया जाये।

शोध परिणाम

प्रस्तुत शोध कार्य के लिये प्रश्नावली एक अच्छी युक्ति नहीं हो सकती , लेकिन किशोरों की रूचि एवं गुप्त व्यवहार का अध्ययन करने के लिये यह एक अच्छा उपकरण है। किशोरों में उत्पन्न रूचियों में शैक्षिक रुचियों की भूमिका सकारात्मक है। किशोरों का मानना है कि शैक्षिक रुचियॉ शोध रोजगार तथा कैरियर की रूचियों को त्रीव गति से बढाने में सक्षम हैं।
अध्ययन की महत्वपूर्ण प्रप्ति निम्नवत हैं।
1–लगभग 80 प्रतिशत शहरी किशोर तथा 50 प्रतिशत ग्रामीण किशोर विधालय नियमित जाना पसंद करते है।

2–लगभग 80 प्रतिशत शहरी किशोर स्नातक से अधिक शिक्षा गृहण करना चाहते है तथा 50 प्रतिशत ग्रामीण किशोर तथा स्नातक तक शिक्षा गृहण करना चाहते है।

3–लगभग 40 प्रतिशत शहरी किशोर तथा 50 प्रतिशत ग्रामीण किशोर स्काउटिंग में भाग लेना चाहते है।

षोध अभिकल्प अनुसंधान पद्धति

यह अध्ययन सर्वे द्वारा किया गया है। रूचिगत आधार पर शैक्षिक रुचियों के मनोवैज्ञानिक विश्लेषण हेतु 14 से 18 वर्ष की आयु वर्ग के किशोरों को विभिन्न कालेजों से रैन्डमली आधार पर चयन किया गया हैं। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकत्री ने प्रश्नावली विधि का प्रयोग किया है। प्रश्नावली को पॉच वर्गों में बॉटा गया था जिस पॉचों वर्गों में दस दस प्रश्न दिये हैं। इस तरह के नमूना चयन करने का कारण निम्नवत है।
1–किशोरों का विकास रुचि के आधार पर होता है।

2–शैक्षिक रुचियॉ प्रत्येक रुचि को बढ़ाने में अग्रणी भूमिका का निर्वाह करती है।

3–शैक्षिक रुचियॉ रोजगार कैरियर चुनाव तथा बेहतर भविष्य निर्माण में सहायक है।

4–शैक्षिक रुचियॉ तार्किकता बुद्धिजीविता तथा उचित व्यक्तिक्व को प्रभावी बनाने में सक्षम है।

सन्दर्भ सूची:

1.. हाल,जी. स्टेनले : एडोलेसेन्स, डी. एपिलटन एण्ड़ कंपनी 1921. टवसण्1ए बेंचजमत1ण्

2. स्ट्रांग महोदय : काउंसलिंग टेक्नीक इन कालेज एण्ड़ सेकेण्ड्री स्कूल्स न्यूयार्क हार्पर एण्ड़ ब्रोस पृ02।

3.सुपर महोदय : इबिड़।

4. बकिंधम : ''आधुनिक शिक्षामें मापन एवं मूल्यांकन'' एस0पी0 गुप्ता षारदा प्रकाषन इलाहाबाद।